A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

Dr. Mritunjay Sharma[1] & Kumari Muskan[2]

1Assistant Professor, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Shimla, Himachal Pradesh
2 Research Scholar, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla, Himachal Pradesh

OPEN ACCESS

सार

इस शोध का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना रहा। असके लिए हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संगीत विभाग को छोड़कर अन्य शैक्षणिक विभागों में से न्यादर्श के रूप में शहरी क्षेत्र के 107 छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की 70 छात्राओं को लिया गया। सर्वेक्षण विधि द्वारा इक्टठे किए गए दत्त सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 76.67 है, जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 84.67 है। शहरी क्षेत्र के छात्रों की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का विचलांक 04.79 है, जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का विचलांक 04.59 है। 'टी' की गणना का मान 11.16 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर के मानक मूल्य 02.58 से अधिक है। इसलिए कहा जा सकता है 'टी' (11.16) सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। निष्कर्ष निकलता है कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अतः शास्त्रीय संगीत के प्रति शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अभिवृत्ति, शहरी क्षेत्र के छात्रों की तुलना में अधिक है।

कुंजी शब्द: *अभिवृत्ति, सांगीतिक अभिवृत्ति, शास्त्रीय संगीत।*

भूमिका

सभी कलाओं में से संगीत कला को प्रमुख स्थान दिया गया है। संगीत वह कला है जो कि मानव जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक जुड़ी हुई है। जीवन का कोई भी कार्य इसके बिना अधूरा है। इतना ही नहीं, पशु-पक्षी भी संगीत के आनन्दवर्धक प्रभाव से अछूते नहीं हैं। प्रत्येक स्थान पर संगीत का अपना महत्व है। अभिवृत्ति व्यक्ति के मानसिक व सामाजिक व्यवहारों को दिशा प्रदान करती है। यह एक मनोवैज्ञानिक शब्द है जिसके द्वारा 'मन' एवं 'मानव व्यवहार' का अध्ययन किया जाता है। यदि हम वर्तमान समय की चर्चा करें तो हमारे शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में विशेष परिवर्तन आया है। आज की युवा पीढ़ी अपने भारतीय संगीत को भूलाकर पश्चिमीकरण की ओर अग्रसर हो रही है। वर्तमान समय में संगीत, संस्थागत शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक परिवर्तित सामाजिक परिस्थितियों के कारण संगीत के प्रति जनसाधारण की भावना तथा रूचियों में भी परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। व्यक्तित्व की भिन्नता के कारण सभी मनुष्यों की अभिवृति में भी अन्तर होता है। मनुष्य के आसपास का वातावरण तथा परिस्थितियाँ मनुष्य की प्राथमिकताओं को पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। शहरी तथा ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के रहन-सहन तथा भिन्न वातावरण की परिस्थितियों का प्रभाव उनके चयन तथा सांगीतिक प्राथामिकताओं पर भी पड़ता है। विद्यालयों में विद्यार्थी भिन्न-भिन्न प्रकार के संगीत को प्राथमिकता देते हैं तथा पसंद करते हैं। कुछ विद्यार्थी शास्त्रीय संगीत, कुछ विद्यार्थी लोक संगीत तथा कुछ विद्यार्थी पाश्चात्य् संगीत आदि को प्राथामिकता देते हैं।

संगीत मस्तिष्क, मन, आत्मा और अन्तःकरण से जुड़ा है और मानव की शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक और बौद्धिक प्रवृत्तियों से जुड़ा है। संगीत सिर्फ मनोरंजन नहीं है, बल्कि जीवन को बनाने, बनाने और विकसित करने का प्रेरणा स्त्रोत है। सांगीतिक ध्वनियां मानसिक स्थितियों का संकेत करती हैं और हमारे भावों को प्रभावित करती हैं। मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो मन और मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। इसका लक्ष्य मानव के सभी विचारों और व्यवहारों को समझना है। मनोविज्ञान का अध्ययन करने से हम दूसरों और अपने आप को आसानी से समझ सकते हैं। मनोविज्ञान चेतन या अवचेतन अवस्था में छिपे हुए भावों को बाहर निकालता है। ये भाव आम तौर पर व्यक्तित्व से नहीं प्रकट होते। संगीत को भावों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन माना जाता है। व्यक्ति की अभिवृत्ति संगीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कोई व्यक्ति अपनी

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

अभिवृत्ति के कारण किसी विशेष प्रकार का संगीत सुनता है, उसे पसंद करता है और उसे सीखने का प्रयास करता है। वर्तमान विद्यार्थियों की संगीत के प्रति अभिवृत्ति को जानने से हमें उनके संबंधों और भविष्य की संभावनाओं के बारे में बहुत कुछ पता चलता है।

संगीत

कोई भी संगीत कला का उद्देश्य जीवन को सुंदर बनाना है और मानव मन के अदृश्य भावों को व्यक्त करना है। संगीत को सभी कलाओं में से सर्वश्रेष्ठ और सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। संगीत खुशी का प्रतीक है। ईश्वर का स्वरूप आनन्द है। संगीत ही दुःख के लेष तक भी नहीं जाने वाला सुख देता है। संगीत एक ऐसी कला है जो जीवों को एक दूसरे से भावात्मक संबंध बनाने में मदद करती है। यह एक कला है जिसमें संगीतज्ञ स्वर, ताल और लय के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। जब संगीत बजता है, हर व्यक्ति थिरकने लगता है। यह भौतिक सुखों के साथ-साथ आत्मिक सुख भी देता है। संगीत मस्तिष्क, मन, आत्मा व अन्तःकरण से जुड़ा हुआ है और मानव की शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक और बौद्धिक प्रवृत्तियों से जुड़ा हुआ है।

संगीत शिक्षा

संगीत शिक्षा से शारीरिक बुद्धि, भावना, इच्छा, सहनशीलता, प्रदर्शन की क्षमता और लक्ष्य प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा का विकास होता है। वहीं, समूहगान, वादन, बैंड आदि एकता की भावना को बढ़ाते हैं, मैत्रीपूर्ण संबंध मजबूत होते हैं और परस्पर सहयोग की भावना पैदा होती है। संगीत एकतापूर्ण साम्प्रदायिकता दिखाता है। जीवन को सुखी बनाने के लिए संगीत सबसे अच्छा विकल्प माना जाता है। भारतीय संगीत का ऐतिहासिक अध्ययन बताता है कि वैदिक काल में संगीत को भगवान् को प्रसन्न करने का सबसे बड़ा साधन माना गया था। उस समय, भक्ति या उपासना के सभी मार्गों में संगीत बहुत विकसित हो गया था, और इसका उद्देश्य समाज की सेवा करना था। प्रारंभिक संगीत धीरे-धीरे विकसित हुआ है। उस समय की शिक्षा व्यवस्था आज की शिक्षा व्यवस्था से भिन्न रही है क्योंकि समाज की परिस्थितियां इसे प्रभावित करती थीं।

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान हमारे मन का अध्ययन करता है। हम किन मुद्दों पर और कैसे विचार करते हैं, कुछ बातें हमें याद रहती हैं और कुछ जल्दी भूल जाती हैं, हमारे भावनात्मक विचार, आदत और विचार कैसे बदलते हैं, ये सब मनोविज्ञान में आते हैं। मनोविज्ञान हमारे पूरे जीवन और व्यवहार को देखता है। आत्म-संयम और आत्म-परिचय के लिए मनोविज्ञान का अध्ययन आवश्यक है। मानव समाज में रहते और काम करते हैं क्योंकि वे सामाजिक प्राणी हैं। उसे जीवन में सफलता और संतोष नहीं मिलता अगर वह दूसरों के सहचार, सहानुभूति और सहयोग के बिना रहता है। मनोविज्ञान मानव स्वभाव की व्याख्या करता है। 'मनस' शब्द को भारतीय मनोविज्ञान में केवल यन्त्र के रूप में प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ भाषा की दृष्टि से मन, हृदय, समझ, प्रत्यक्ष ज्ञान प्रज्ञा आदि है। यह साहित्य में रुचि, इच्छा, विचार, कामना और सोच को व्यक्त करता है।

अभिवृत्ति

एक व्यक्ति की अंदरूनी भावना अभिवृत्ति है। यह आपको किसी काम को करने या छोड़ने के लिए प्रेरित करता है। हम अभिवृत्ति से अपनी पसंद की तरह व्यवहार करते हैं और नापसंद की तरह व्यवहार छोड़ते हैं। यह एक मानसिक कार्य है जो धीरे-धीरे विकसित होता है। व्यक्तिगत अभिवृत्तियों को देखा या अनुभव नहीं किया जा सकता; वे सिर्फ अनुमानित होते हैं। मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिए अभिवृत्तियों को जानना अनिवार्य है। मानव व्यवहार अभिवृत्तियों से प्रभावित होता है और दिशा देता है। किसी भी व्यक्ति की अभिवृत्तियों को जानकर, हम आसानी से उसके व्यवहार को समझ सकते हैं और उसके व्यवहार के बारे में भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं। कुछ अभिवृत्तियाँ पर्यावरण और अनुभव से पैदा होती हैं, और कुछ दूसरों में परिवार, समाज या अन्य प्रभावशाली लोगों से आती हैं। यह एक व्यक्ति में जन्मजात नहीं होता; इसके बजाय, यह उसके आस-पास के परिवेश और जीवनशैली से पैदा होती हैं। वास्तव में अभिवृत्ति एक व्यक्ति की भावना और विश्वास का संयोजन है जो उसके विचारों, स्थिति या अन्य लोगों के प्रति विशिष्ट है। अभिवृत्ति भावनाओं, विचारों और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का प्रकटीकरण है।

साधारण भाषा में अभिवृत्ति का अर्थ है अनुभव करना, सोचना या किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण, रवैया या रुझान इत्यादि। इसका अर्थ है किसी व्यक्ति का किसी घटना, प्रणाली, विचार या वस्तु पर दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण ही हमें उन विचारों, प्रणालियों, घटनाओं और वस्तुओं के प्रति हमारे व्यवहारों का स्पष्ट रूप या दिशा देता है। समाज में रहने वाले लोगों की अभिवृत्तियों को उनके समाज, संस्कृति, पर्यावरण, परिवार, दोस्तों और अन्य कारक प्रभावित करते हैं। वर्तमान मनोविज्ञान में अभिवृत्ति का अधिक प्रयोग सामाजिक व्यवहार को समझने के लिए किया जाता है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

तैयारी की स्थिति अभिवृत्ति का केंद्र है। अभिवृत्ति शब्द का शाब्दिक अर्थ है किसी लक्ष्य के लिए कोई जगह लेना। इसका दूसरा शाब्दिक अर्थ है- शारीरिक स्थिति जो किसी व्यक्ति के मूड़ या स्थिति को बताती है। बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने अभिवृत्ति को अपने-अपने ढंग सें परिभाषित किया है।

अभिवृत्ति की विशेषताएँ

- अभिवृत्ति एक व्यक्ति, घटना, विचार या वस्तु के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल भावना व्यक्त करने का नाम है।
- व्यक्ति के संवेग अभिवृतियों से जुड़े रहते हैं।
- कई सामाजिक संबंध अभिवृत्तियों को जन्म देते हैं।
- यह सामाजिक और मानसिक है।
- वे बदलते रहते हैं, लेकिन लगभग स्थायी हैं। अधिक समय में अभिवृत्ति बदल सकती है।
- मनोवैज्ञानिक पदार्थ अभिवृत्ति के लिए महत्वपूर्ण है। हम शब्द से किसी भी वस्तु, स्थान, वाक्य, संस्था, विचार, जाति, धर्म, मूल्य, आदर्श, व्यवसाय या कुछ भी समझते हैं। इनके प्रति व्यक्ति का विचार संवेगात्मक होता है। भावनाओं की गहराई अभिवृत्ति है।
- अभिवृत्तियाँ अप्रत्यक्ष हैं क्योंकि वे मनोवैज्ञानिक वातावरण बनाते हैं जो सीधे नहीं देखा जा सकता। लेकिन इसके परिणामों को देखकर ही इन्हें अप्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।
- इससे व्यक्ति की क्षमता कम हो जाती है। सकारात्मक व्यक्ति बहुत अधिक सक्षमता व्यक्त करेगा।
- अभिवृत्ति एक व्यक्ति की प्राकृतिक रुचि है किसी चीज या कार्य के प्रति।
- यह अनुभवों से प्राप्त होता है और वस्तुओं, मूल्यों और व्यक्तियों के संबंधों से सीखा जाता है।
- यह व्यक्ति की विशिष्ट दशा निर्देशित करती है।
- यह किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करता है, और इस संबंध की मुख्य विशेषता दिशात्मकता है, जिसका प्रमाण पसंद-नापसंद प्रतिक्रियाओं से मिलता है।
- संवेगात्मक तत्व और प्रत्यक्षीकरण इनके विकास में सहायक होते हैं।
- ये लोगों की बुद्धि, मानसिक प्रतिभा और शब्दावली से जुड़े हैं।
- यह व्यवहार पर प्रभाव डालती है, इसलिए एक व्यक्ति की आदतों का दूसरे व्यक्ति की आदतों पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए, यह भी व्यक्ति के व्यवहार को पूर्वानुमानित करने में मदद करते हैं।
- यह आम विशिष्ट परिस्थितियों और वस्तुओं के प्रति हमारा ध्यान आकर्षित करती है।
- अभिवृत्तियों को कहा जाता है कि वे न तो बहुत बदलती हैं और न ही हर समय बदलती हैं। इनकी हालत सापेक्षिक है। भविष्य में इनका क्या होगा या नहीं कहा जा सकता।
- अभिवृत्तियों में निरंतरता है। निश्चितता का स्तर व्यक्ति के व्यवहार पर उतना ही प्रभावी होगा, अर्थात अभिवृत्ति उतनी ही प्रभावी होगी। प्रत्यक्ष अनुभव एक व्यक्ति को किसी चीज़ के बारे में अधिक जानकारी देता है, जिससे उनकी निष्चित अभिवृत्तियाँ बनती हैं।
- किसी भी अभिवृत्ति की कर्षण शक्ति ही उसकी अनुकूलता या प्रतिकूलता है। किसी भी व्यक्ति को किसी भी वस्तु पर बहुत अधिक या बहुत कम अनुकूल या प्रतिकूल विचार हो सकते हैं। यही कारण है कि प्रत्येक अभिवृत्ति की कर्षण शक्ति में दो विशेषताएँ होती हैं, धनात्मक कर्षण शक्ति तथा ऋणात्मक कर्षण शक्ति।

दो प्रकार की अभिवृत्तियाँ होती हैं:

- अनुकूल अभिवृत्ति
- प्रतिकूल अभिवृत्ति

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

अनुकूल अभिवृत्ति वह है जब हम कुछ वस्तुओं के प्रति अच्छी सोच बना लेते हैं। इसके विपरीत, बुरी धारणाएँ प्रतिकूल अभिवृत्ति कहलाती हैं जब हम किसी को पसंद नहीं करते।

एक अर्जित प्रवृत्ति अभिवृत्ति है। आयु और अनुभव व्यक्ति की अभिवृत्तियों को बनाते हैं। कुछ वैज्ञानिकों ने अभिवृत्ति के विकास पर प्रभाव डालने वाले कई कारक बताए हैं। व्यक्ति का व्यक्तित्व अभिवृत्ति से बदलता रहता है। अभिवृत्तियों को बनाने में कई कारक शामिल हैं। क्रेच, क्रचफील्ड और बैलकी के अनुसार, व्यक्तित्व, आवश्यकता पूर्ति, समूह संबंध और सूचनाएं अभिवृत्ति निर्माण के मुख्य निर्धारक हैं।

अभिवृत्ति बदलाव

अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होती, बल्कि समाज में रहकर विकसित होती है। इसलिए इनका परिवर्तन भी हो सकता है। यही कारण है कि उचित परिस्थितियां पैदा होने या उत्पन्न होने पर उन्हें अपने मनचाही दिशा में बदल दिया जा सकता है। लेकिन जो अभिवृत्तियां व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं, उन्हें बदलना कठिन होता है, लेकिन जो अभिवृत्तियां व्यक्ति के लिए कम महत्वपूर्ण हैं या उनके साथ संबंध है, उन्हों को बदलना आसान है।

अभिवृत्ति बदलाव के निर्धारक तत्व

अभिवृत्तियों में बदलाव अनुकूल या प्रतिकूल होगा यह उस विशेष समूह की अभिवृत्ति की स्थिति पर निर्भर करता है। अभिवृत्ति में परिवर्तन व्यक्ति के शीलगुणों पर भी निर्भर करता है। अभिवृत्ति परिवर्तन के लिए आवश्यक विशेषताएं हैं, जैसे प्रबलता, बहुतत्वता, संगति, अन्तरसम्बन्धता, सन्नादिता और आवश्यकता की सन्तुष्टि. ऐसे अभिवृत्तियों में प्रतिकूल परिवर्तन कठिन है, लेकिन अनुकूल परिवर्तन आसानी से किया जा सकता है।

(क) बहुतत्वता: किसी अभिवृत्ति का निर्माण जितने कठोर होगा, उतनी ही जटिलता होगी। इससे भाव और क्रिया प्रवृत्ति का भी स्वरूप निर्धारित होगा। किसी वस्तु में कम जानकारी होने पर अभिवृत्ति का स्वरूप सरल होगा। किसी व्यक्ति या वस्तु के विभिन्न भागों में जानकारी होने पर अभिवृत्ति का स्वरूप जटिल होगा।

(ख) सामंजस्य: संगति संघटकों की कर्षण शक्ति से अधिक होती है। अभिवृत्ति तीनों संघटकों का एक संगठित स्थाई तन्त्र है। इन तीन संघटकों में एकता का भाव है। इस संगति के कारण व्यक्ति किसी वस्तु को विशेष रूप से सोचता है और व्यवहार करता है।

(ग) सम्मिलितता: व्यक्ति की अभिवृत्तियां एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं, न कि अकेली होती हैं। संयुक्त या झुण्ड अभिवृत्ति पुंज है। इस तरह, अभिवृत्ति सन्तुलित होगी जब यह संयुक्त पुंज या झुंड की अन्तरसम्बन्धता अधिक होगी।

(घ) सन्नादिता: अभिवृत्ति पुंज विभिन्न सन्नादिता अभिवृत्तियों के मेल से बनता है। अभिवृत्ति पुंजों में पाई जाने वाली अभिवृत्तियों में कुछ न कुछ समानता होनी चाहिए। यदि वे आपस में मेल खाते हैं तो अभिवृत्ति स्थिर रहेगी, अगर नहीं तो व्यक्ति तनाव अनुभव करेगा।

सांगीतिक अभिवृत्ति

संगीत व्यक्तित्व और भाव को बदल सकता है। जब संगीत बोलता है, दर्द दूर हो जाता है। दुनिया में संगीत से बेहतर कोई कला नहीं हो सकती। व्यक्ति का व्यवहार अभिवृत्ति पर निर्भर करता है। अनुभव करना, सोचना या किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टिकोण, रवैया या रूझान को अभिवृत्ति कहते हैं। सांगीतिक अभिवृत्ति का अर्थ है संगीत के ज्ञान और सोच। मनुश्य अपने भावों को व्यक्त करने का कोई न कोई तरीका खोजता है। कला भावों को व्यक्त करने के लिए आवश्यक है। जब कोई अपने भावों व विचारों को संगीत के माध्यम से व्यक्त करता है, तो श्रोता और भावों को व्यक्त करने वाला व्यक्ति दोनों खुश हो जाते हैं।

मनोवैज्ञानिक भाषा में भावों की अभिव्यक्ति को "व्यवहार" कहा जाता है; दूसरे शब्दों में, भावों की अभिव्यक्ति ही "व्यवहार" है। स्थूल भावों को साहित्य या बहस से व्यक्त किया जा सकता है, लेकिन भावों की 'सूक्ष्म' अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन संगीत है। संगीत से प्रभावित होकर मनुष्यों के विशिष्ट व्यवहारों को उजागर करता है। आधुनिक समय में संगीत की इसी शक्ति का उपयोग करके संगीतात्मक चिकित्सा का विकास किया जा रहा है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हर व्यक्ति के जीवन में संगीत का एक अलग अर्थ और दृष्टिकोण है। जबकि कुछ लोग संगीत को सिर्फ एक रुचि का विषय ही समझते हैं, तो कुछ लोग उच्च कोटि का महान कलाकार बनना अपना जीवन लक्ष्य बना लेते हैं। शिक्षा के दौरान कुछ लोग संगीत सुनना पसंद करते हैं, जबकि कुछ लोग बाहर या अंदर खेलते समय और अन्य अवसरों पर संगीत सुनना पसंद करते हैं। फिर भी, कुछ लोगों को अपने खाली समय में संगीत सुनना अच्छा लगता है क्योंकि यह उनके मन को शांत करता है और उन्हें आराम देता है। इस तरह, लोगों की अलग-अलग सांगीतिक अभिवृत्तियों से उनके अलग-अलग व्यवहार का अनुमान लगाया जा सकता है।

कला एक ऐसी सुंदर अभिव्यक्ति है जिससे मन द्रवित हो जाता है। जब मन भावों से भरा होता है, तो वह अद्भुत सौन्दर्य का दर्षन करता है। कला अभिवृत्तियों को सृजनात्मक रूप देने की कोशिश करती है। कला मानव-हृदय के उद्गार, नवीन चेतना, नवीन आयाम और स्फूर्ति का उद्घाटन करती है। उसकी सांगीतिक अभिवृत्ति को उसके आसपास के वातावरण और माहौल का बहुत प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति जिस क्षेत्र से संबंधित है, वहाँ के लोक संगीत, लोक धुनें, उत्सव, मेले, शादी-विवाह और अन्य अवसरों पर गाया जाने वाला लोक संगीत के बारे में अपनी अलग धारणा बनाता है। बच्चों का व्यवहार भिन्न होता है जिनके घर में संगीत का वातावरण है और वे संगीत से बहुत जुड़े होते हैं। इसलिए संगीत मानवीय भावों को व्यक्त करने का सर्वोच्च माध्यम है। संगीत से प्रभावित होकर मनुष्य के विशिष्ट व्यवहारों को दिखाता है, जिससे उसकी अभिवृत्ति का अनुमान लगाया जा सकता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य

अल्बर्ट लेब्लांक (1981) ने प्रदर्शन माध्यम, गति और शैली का बच्चों की संगीत पसंद पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन का लक्ष्य पंद्रहवीं कक्षा के छात्रों की शैली, गति और प्रदर्शन माध्यम के प्रभावों को मापना था। पसंदीदा शैलियों का एक पदानुक्रम बनता है। सहसंबंध विश्लेषण बताता है कि शैली का वरीयता से सबसे अधिक संबंध था। एकत्रित शैलियों में तेज़ गति और वाद्य माध्यम थोड़ा महत्वपूर्ण थे।

कॉलेज के छात्रों का संगीत के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन दिमित्रीजे बुज़ारोव्स्की ने किया (1992-1993)। अध्ययन ने पाया कि स्कूल में संगीत प्रदर्शन का अनुभव जैज़ के प्रति दृष्टिकोण से सकारात्मक रूप से जुड़ा है, और कुछ प्रकार के संगीत के प्रति संगीत के प्रमुख और गैर-संगीत के प्रमुख अलग-अलग होते हैं। श्रोता का दृष्टिकोण

हेमन्त कुमार शर्मा (2014) ने लिंग भेद के आधार पर स्नातक स्तर पर शहरी ग्रामीण पृष्ठभूमि और संगीत अभिवृत्ति का अध्ययन किया। यह दिखाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों की संगीत में रुचि अधिक है। शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्रों में संगीत के प्रति अधिक रुचि पाई गई है, साथ ही शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्रों में संगीत के प्रति अधिक रुचि पाई गई है।

कमलेश भटोईया (2015) ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि का विश्लेषण किया। षोध के परिणाम से पता चलता है कि लड़कों की शास्त्रीय संगीत में रुचि लड़कियों की अपेक्षा कम होती है।

स्नेज़ाना डोब्रोटा (2016) ने शास्त्रीय संगीत और संगीत कक्षाओं के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण देखा। परिणामों से पता चलता है कि उच्च शिक्षा में शास्त्रीय संगीत के संपर्क का लाभ है, न केवल शास्त्रीय संगीत और संगीत कक्षाओं के प्रति दृष्टिकोण पर, बल्कि मौखिकता के अस्तित्व पर भी।

गौरीभटला यामिनी और डॉ. नेत्रावती (2022) संगीत मनुष्यों की एक बुनियादी विशेषता है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि क्या युवा वयस्कों में संगीत की रुचि और सकारात्मक दृष्टिकोण के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। इस अध्ययन के परिणाम वर्णनात्मक सांख्यिकी, एक टी-परीक्षण और पियर्सन के सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी का उपयोग करके स्थापित किए गए थे। लोग रोजमर्रा के तनाव से उबरने के लिए संगीत सुनते हैं। हर किसी की अपनी पसंदीदा संगीत शैलियाँ हैं।

सुपर्णा मंडल (2025) ने पश्चिम बंगाल में तनाव कम करने पर संगीत की भूमिका के प्रति उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया। संगीत अपनी श्रवण प्रकृति के माध्यम से विशिष्ट संरचित श्रवण तत्वों को मिला देता है और लोगों में मानसिक कल्याण को प्रेरित करने वाली व्यवस्थाओं में रुक जाता है। पसंदीदा संगीत महत्वपूर्ण अवसरों से पहले मनोदशा बढ़ाने का काम करता है और भावनाओं के बढ़ने पर सुखदायक राहत प्रदान करता है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

उद्देश्य: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध क्षेत्र: इस शोध कार्य का क्षेत्र हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन तक सीमित रहा। इस शोध के अन्तर्गत हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संगीत विभाग को छोड़कर अन्य शैक्षणिक विभागों में शिक्षा ग्रहण करने वाले शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

परिकल्पना: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

न्यादर्श: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संगीत विभाग को छोड़कर अन्य शैक्षणिक विभागों में से न्यादर्श के रूप में शहरी क्षेत्र के 107 छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की 70 छात्राओं को लिया गया।

शोध विधि: इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

उपकरण: डॉ. मृत्युंजय शर्मा द्वारा बनाई गई सांगीतिक अभिवृत्ति मापनी

सांख्यिकी विधि: 'टी-टेस्ट'।

विश्लेषण तथा परिणाम

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने के लिए दोनों समूहों से प्राप्ताकों का मध्यमान, विचलांक तथा 'टी' के मूल्य को तालिका 1 में दर्शाया गयाा है।

तालिका संख्या 1: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति से प्राप्ताकों का मध्यमान, विचलांक तथा 'टी' का मूल्य

क्रं	समूह	संख्या	मध्यमान	विचलांक	'टी'
1	शहरी क्षेत्र के छात्र	107	76.67	04.79	11.16*
2	शहरी क्षेत्र की छात्राएं	70	84.67	04.57	

df = 175, * = 0.01 पर सार्थक, 'टी' का मानक मूल्य = 2.58, 0.01 स्तर पर

तालिका 4.8 से पता चलता है कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 76.67 है, जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 84.67 है। शहरी क्षेत्र के छात्रों की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का विचलांक 04.79 है, जबकि शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति का विचलांक 04.59 है। शहरी क्षेत्र की छात्राओं तथा शहरी क्षेत्र के छात्रों की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों के बीच का अंतर 84.67-76.67 के रूप में परिकलित किया जा सकता है, जो 08.00 का मान देता है। उपर्युक्त तालिका से प्राप्त 'टी' की गणना का मान 11.16 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर के मानक मूल्य 02.58 से अधिक है। इसलिए कहा जा सकता है 'टी' (11.16) सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अतः शास्त्रीय संगीत के प्रति शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अभिवृत्ति, शहरी क्षेत्र के छात्रों की तुलना में अधिक है। इसलिए परिकल्पना 'हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होगा', अस्वीकार की गई।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ग्राफ संख्या 4.8: हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शास्त्रीय संगीत के प्रति अभिवृत्ति की तुलना

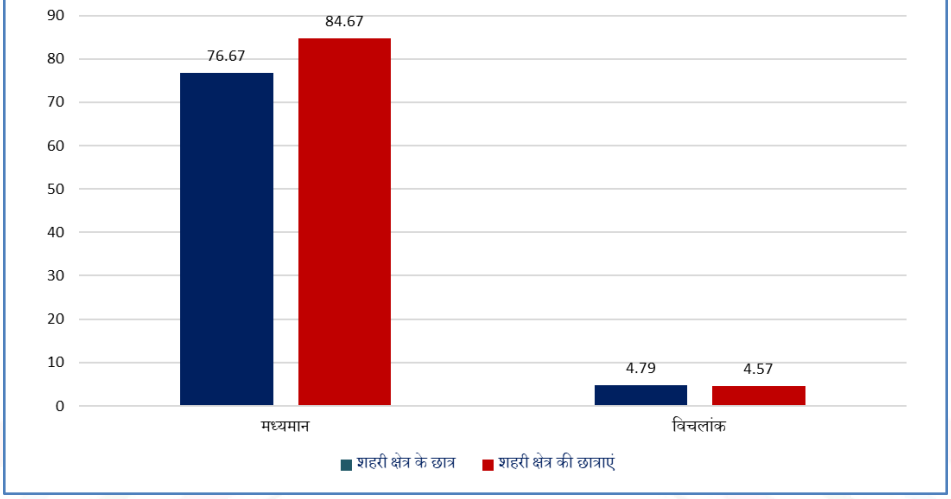

इन दोनों समूहों में शहरी छात्रों की अभिवृत्ति शहरी छात्रों से कम होने के कई कारण हो सकते हैं। वर्तमान में छात्रों की अपेक्षा छात्राएं संगीत में अधिक रुचि दिखा रही हैं। पहले छात्राओं को पढ़ाने में उनके अभिभावकों ने ही नकारात्मक विचार दिखाए। हालाँकि, छात्राओं को रोजगार और आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं। सरकार और परिवार इसमें पूरा सहयोग देते हैं। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम सुविधाएं मिलती हैं। वह रोजगार खोजने की अधिक कोशिश करते हैं। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक संवेदनशील होती हैं। वह संगीत के माध्यम से आसानी से अपनी भावनाओं को व्यक्त करती है। यही कारण है कि छात्राओं का घर भी संगीतमय हो सकता है। जैसा कि हर व्यक्ति अपने आस-पास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता है, उनके माता-पिता या कोई अन्य पारिवारिक सदस्य घर में संगीत प्रेमी हो सकते हैं या संगीत से जुड़ा हुआ हो सकता है. उनके घर में संगीत का माहौल होने के कारण शायद उन्होंने संगीत के प्रति सकारात्मक सोच को छात्रों की अपेक्षा अधिक विकसित किया होगा।

निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के शहरी क्षेत्र के छात्रों की अभिवृत्ति तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। शास्त्रीय संगीत के प्रति शहरी क्षेत्र के छात्रों की अभिवृत्ति, शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अभिवृत्ति की तुलना में कम है।

उपसंहार

शास्त्रीय संगीत के प्रति शहरी क्षेत्र के छात्रों की अभिवृत्ति तथा शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अभिवृत्ति की तुलना में कम है। प्रत्येक स्थान पर संगीत का अपना महत्व है। अभिवृत्ति व्यक्ति के मानसिक व सामाजिक व्यवहारों को दिशा प्रदान करती है। शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में विशेष परिवर्तन आया है। आज की युवा पीढ़ी अपने भारतीय संगीत को भूलाकर पश्चिमीकरण की ओर अग्रसर हो रही है। व्यक्तित्व की भिन्नता के कारण सभी मनुष्यों की अभिवृति में भी अन्तर होता है। मनुष्य के आसपास का वातावरण तथा परिस्थितियाँ मनुष्य की प्राथमिकताओं को पूर्ण रूप से प्रभावित करती है। शहरी तथा ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के रहन-सहन तथा भिन्न वातावरण की परिस्थितियों का प्रभाव उनके चयन तथा सांगीतिक प्राथामिकताओं पर भी पड़ता है। व्यक्ति की अभिवृत्ति संगीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कोई व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति के कारण किसी विशेष प्रकार का संगीत सुनता है, उसे पसंद करता है और उसे सीखने का प्रयास करता है। वर्तमान विद्यार्थियों की संगीत के प्रति अभिवृत्ति को जानने से हमें उनके संबंधों और भविष्य की संभावनाओं के बारे में बहुत कुछ पता चलता है। शास्त्रीय संगीत के प्रति शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अभिवृत्ति अधिक है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संदर्भ ग्रंथ

उप्पल, सविता. (2003). संगीत शिक्षण व मनोविज्ञान, मार्डन बुक हाऊस, चण्डीगढ़।

ऋषितोष, कुमार. (2010). संगीत शिक्षण के विविध आयाम, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

गर्ग, लक्ष्मी नारायण.(1989). निबन्ध संगीत, संगीत कार्यालय हाथरस, 1989।

गुप्ता, आर. के. (2013). मनोविज्ञान तथा सामाजिक व्यवहार, सुमित इन्टरप्राइजज़े, नई दिल्ली।

गुप्ता, एस.पी., गुप्ता, अलका. (2003). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

चौबे, डा. अमरेन्द्र. (1988). संगीत की संस्थागत शिक्षण-प्रणाली, जयकृष्ण अग्रवाल प्रकाशक, अजमेर।

चौबे, सुशील कुमार. (1975). हमारा आधुनिक संगीत, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ।

तिवारी, डा॰ किरन. (2008). संगीत एवं मनोविज्ञान, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

धर्मावती, श्रीवास्तव. (2014). प्राचीन भारत में संगीत, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी।

शर्मा, डा. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल, एच॰जी॰ पब्लिकेशनस्, नई दिल्ली।

शर्मा, डा॰ मनोरमा. (1990). संगीत एवं शोध प्रविधि, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।

शर्मा, हेमन्त कुमार. (2014). शहरी ग्रामीण पृश्ठभूमि व लिंग भेद के आधार पर सांगीतिक अभिवृत्ति का अध्ययन स्नातक स्तर पर, विद्यावाचस्पति अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला।

सक्सेना, डा. मधुबाला. (1990). भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़।

सक्सेना, मधुबाला. (1990). भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर, हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़।

स्टीफन, जे.एस. (1972). शिक्षा मनोविज्ञान, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़।

Aldeguer, Santiago Pérez (2013): "The influence of students' cultural music and classroom music activities on their attitudes towards their multiethnic peers" 5th World Conference on Educational Sciences - WCES 2013

Awasthi, S.S., A critique of Hindustani Music and Music Education, Dhanpat Rai and Sons, Jallandhar, Delhi.

Bacon, A., & Allyn, Psychology, Baron, A. Robert, Viacom Company 160. Ground Street, Needham, Heights M.A. 02194 U.S.A.

Buzarovski, Dimitrije. (1995-1996). College students' attitude toward music. PMEA Bulletin of Research in music education 21 (Fall 1995/96): 20-42.

Chesky, Dr. Kris (2009): "Attitude of College Music Students Towards Noise in Youth Culture" Noise and Health, Vol. 11, January-March 2009.

Douglask, Candland, S, Robert, Moyer, Psychology the experimental approach, M.C. Graw-Hill Book Company New York.

Edward, Auen. L., Techniques of Attitude scale construction, Simons Private Ltd. Haque Building 9, Sprett Road, Balloard Estate Bombay, India.

Gowribhatla Yamini, Nethravathi. (May 2022). IIPR Relationship between Positive Attitude and Music Genres among Young adults, International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research Vol.9, Issue 5, page no. i398-i414.

Hari Haran, H., Kuppurwanyand, Gouri, Indian Music, A Perspective, Sandeep Prakashan, Delhi, 1980.

Pacheco, M., Espinosa, A., & János, E. (2022). Psychometric properties of a scale of attitudes toward musical

Sharma, Dr. Mritunjay (2010). A Comparative Study of Attitude towards Classical Music of College and Secondary School Students" SREIT Journal of Research Shimla